मध्य काल

मध्य काल की अवधि 8 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक मानी जाती है। इस काल को मुख्य दो उपविभागों में बाँटा जा सकता है।

(अ) पूर्व मध्य काल (ब) उत्तर मध्य काल

पूर्व मध्य काल

यह अवधि 8 वीं से 13 वीं शताब्दी तक मानी जाती है। इस समय की शारंगदेव कृति 'संगीत रत्नाकर' और जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' ग्रन्थों से यह बात होता है कि जिस प्रकार आजकल राग - गायन प्रचलित है, उसी प्रकार उस काल में प्रबंध गायन प्रचलित था। इसलिये इस काल को प्रबंध काल भी कहते हैं।
9 वीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक भारत में संगीत की अच्छी उन्नति हुई। उस समय रियासतों में संगीत को आश्रय और संरक्षण मिला जिससे संगीत का प्रचार और विकास हुआ। इस काल की निम्नलिखित संगीत सामग्रियाँ मिलती हैं। -

1) संगीत मकरन्द - इस ग्रंथ के रचयिता नारद हैं, ऐसा मालूम पड़ता है कि एक से अधिक नारद हो चुके हैं, क्योंकि विभिन्न समय में नारद कृत

Scanned with CamScanner

विभिन्न पुस्तकें मिलती हैं जैसे - नारदीय शिक्षा, संगीत मकरन्द, नारदीय संहिता आदि। संगीत मकरन्द के समय के विषय में भी अनेक मत हैं। अधिकांश विद्वान इसे 9 वीं शताब्दी का मानते हैं। इसमें संगीत सम्बन्धी निम्न सामग्रियां मिलती हैं।

क) रागों को स्त्री, पुरुष और नपुंसक वर्गों में विभाजन सर्वप्रथम इसी पुस्तक में प्राप्त होता है, अतः इस ग्रंथ को राग-रागिनी पद्धति का आधार ग्रन्थ कहा जा सकता है।

(ख) संगीत मकरन्द में केवल यही विभाजन ही नहीं, वरन् अन्य विभाजन भी मिलते हैं, जैसे - कम्पन के आधार पर, समय के आधार पर रागों का विभाजन इत्यादि।

(2) गीत गोविन्द - इसकी रचना बारहवीं शताब्दी में पं० जयदेव द्वारा हुई। जयदेव केवल कवि ही नहीं, गायक भी थे। इस पुस्तक में स्वरलिपि रहित संस्कृत में लिखे गये गीतों का संग्रह है, किन्तु केवल शब्दों से उस समय की क्रियात्मक संगीत का ज्ञान नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner